SATISAR FOUNDATION

GLOBAL WORKSHOP ON

"ज्वाला जी"

ON MONDAY 2ND JULY 2012 AT 7.30 P.M.

आषाढ, शुक्ल पक्ष चर्तुदशी-सोमवार

Let us invoke Zawala Ji for the betterment of mankind

For Private Circulation- Not for Sale

Price: Promotion and propagation of Kashmiri Pandit Culture

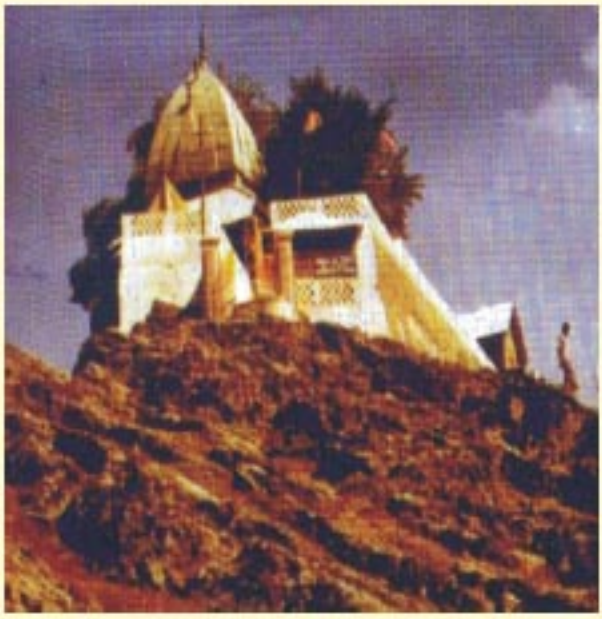

सतीसर सभा मध्ये विदेशां ये गतैः नर।
सतीसर विद्वानेन च्युंत धर्मादि जीवितं।।

धर्म संस्थापनार्थाय ते नरः सुरववान् भवेत्।
निशुल्क पुस्तकान्दध्यात् अधर्म नाशयेत् सदः।।

मेरा आशिर्वाद है कि ईश्वर इनको सफलता प्रधान करें तथा इस पुस्तक के सभी मंत्र व पाठ समय–समय पर अपना प्रभाव दें।

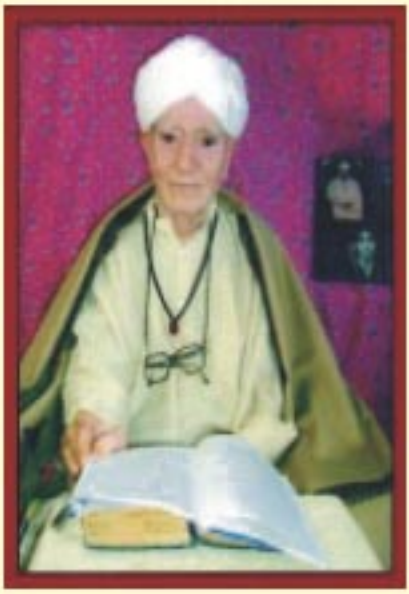

Jyotishachyara &
Karam Kand Shiromani
Sh. Kashi Nath Handoo

(जो वक्ति घर, मन्दिर अथवा सभा में बैठे हो वह पहले निम्नलिखित विधि का प्रयोग कर सकते हैं) जो व्यक्ति यात्रा में हो वे केवल **ध्यान, गायत्री** व **मन्त्र** उच्चारण करें।

(The people who may be at home, Temple or in a group can follow the following prodedure). Those who may be in travel can recite ध्यान, गायत्री व मन्त्र

1. धूप–दीप जलाएँ,
2. सब को तिलक लगाये
3. देवी के चित्र पर तिलक व पुष्प लगायें
4. जप के बाद नैवद्य के रुप मे "तहर" सब में बांटे

एक थाली में किसी पात्र से पानी डालते हुए पढ़ें।

ऊं अस्य श्री ज्वालामुखी मन्त्रस्य वैश्वानर ऋषिः अनुष्टुप छन्दः, श्री ज्वालामुखी देवता, **ह्रीं**, बीजं, **श्रीं** शक्तिः **हूँ** कीलकं आत्मनः वाङगमय कार्यो उपार्जित

स्वदेशे उपद्रव निवार्नार्थं, साधकानां यस्मिन् देश वसते आयुः, आरोय, ऐश्वर्य प्राप्तार्थ श्री ज्वाला दैव्ये संतोषणार्थ मनोकामनां सिद्धयार्थ पाठे विनियोगः

ध्यान रहै माता हमारे सर्व शत्रुओ का भक्षन करती हे इस कारण निष्पाप होकर ध्यान व जप करे।

जप विधि

ज्वाला पर्वत संस्थितां। ज्वालापरीता सयस्रोरुहां तां सरोजशङ्खासि गदा धरां च।

सिंहासने स्थपित पाद पध्मां ज्वालामुखी सद्धृदये स्मरामि ।। (ध्यान)

ज्वालामुख्यै विद्महे, अमृत वासिन्यै धीमहि तन्नो ज्वाला प्रचोदयात् – (3 बार)

ऊं ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम् सर्व शत्रून् भज्ञय भज्ञय ह्रीं फट् स्वाहा। (108)

महिमा

सृष्टि के आदि मे हरि व ब्रह्मा जी के मध्य मे ज्योति स्तम्भ का आर्विभाव हुआ उसी समय से वह स्थान "हहिरेश्वर" के नाम से प्रद्धिध हुआ। उसी ज्योति स्तम्भ के रुप मे शिव की अपार चेतनता "हरिश्वर" से कुछ ही दूरी पर उसी पहाडी श्रंखला की एक चोटी पर प्रकृति की मूलभूत शक्ति "अग्नि" स्वरुपा माता ज्वाला जी का पीठासीन हुई।

इस कारण माता के कई नामो मे एक "हरिहरेश्वर" भी है।

"चण्डी, चुल्ली, चमत्कार कर्त्री **"हरिहरेश्वरी"**

"ज्वाला माता" को कशमीर मे "ज्वाला भगवती" के पवित्र नाम से पुकारा जाता है। इन माता का पीठ श्रीनगर से 20 की0 मी0 पर खिव नामक स्थान पर विद्यमान है।

यहाँ पहेंचने के तीन रास्ते है जो कि क्रमशः लधूः, "बालहामा" व "खनमोह" नामक स्थानो से जाने जाते है।

माता ज्वाला जी का तीर्थ स्थान ऐतहासिक पर्वत श्रंखला से जुडा हे तथा "वस्त्र वन" के नाम से प्रसिद्ध है। यही इस सथान पर एक पवित्र जल कुण्ड हे जो

वासुकि नाग से जाना जाता है। वसुकि ने सागर मंथन के समय रस्सी का काम दिया था जिस कारण उनका नाम "नेति" पड़ा जो कालान्तर मे "नेत" बना इस कारण इस जल कुण्ड को "नेत नाग" कहते है (संस्कृत मे नेति रस्सी को कहते है) इससे यह भी सिद्ध होता है कि सागर मंथन का कार्य कही और नही केवल "सतीसर के अथाह मीठे जल अर्थात क्षीरसागर मे हुआ था।

"तवारीक हसन" के अनुसार यहाँ समय समय पर अग्नि की लपटें दिखाई देती है हमारे समाज के कई बुजुर्गों ने इस अद्भुत अनुभव का साक्षात्कार किया है।

हजारों वर्षो की मान्यता के अनुसार, चण्ड व मुण्ड नामक दो दानवों ने देवताओं की सम्पूर्ण सम्पदा को चुराकर इस सथान के उतर दिशा में स्थित "वस्त्र वन" की एक गुफा में छुपा दिया था।

देवताओं की विनती सुनकर प्रभु शिवजी ने अपनी ज्वाला स्वरुप शक्ति को देवों पर कृपा करने का आग्रह किया।

माता "ज्वाला" जो कि समस्त प्राणीयों के संकटों का नाश करने वाली है ने उन दो दानवों का नाश करके समस्त सम्पदा देवों को वापस दे दी। कहते हे कि वह सम्पदा "खर्वन" (इस समय के 10 खरब) के बराबर थी

इसी कारण इस सथान का नाम "खर्वन" से ख्रिव पड़ा है।

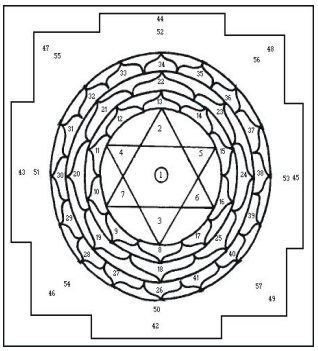

इसी "वसत्र वन" की पहाड़ी के ऊपर माता अपने परिवार सहित शिला रुप मे विद्यमान हुई। इस शिला की अद्भुद्ता यह हे कि यह शिला ज्वाला (लपटों) की तरह "अकाश" मे स्थित है तथा कई भक्त जन आज भी इस को जानने के लिए अपनी बाँहें इस शिला के नीचे ले जाते है। व् किन्ही साध ाको ने जब प्रसाद शिला के पास रखा तो शिला के नीचे से लपटों के रुप मे माता ज्वाला ने उस प्रसाद को ग्रहण किया।

मे उसी परम चेतन शक्ति का हृदय मे स्थित बिन्दु व नाद रुपी रत्न जड़ित सिंहासन पर आरुड ध्यान करता हूँ। वह गोलाकार चेतनता का अथाह प्रवाह जो उस शिला रुपी माता का आसन हे भक्तों को पीत रक्त रत्न के सदृश दीप्तमान प्रकट होता हे (मातृका भेद तन्त्र)

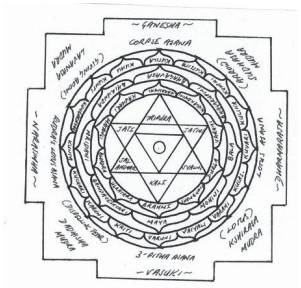

यन्त्र रुप मे माता षठकोण युक्त त्रिकोणों के मध्य मे स्थित तिकोण में बिन्दू पर विराजमान है।

इनमे ऊपर का त्रिकोण "सुन्दरी भुवन" है तथा नीचे का त्रिकाण "कालिका भुवन" है उसके उपरान्त ब्रह्माण्ड रुपी गोलाकार चक्र है तथा इसके उपरान्त 8 पटलो से तथा 16 पटलो से युक्त तीन और गोलाकार चक्र है व पृथ्वी मण्डल है।

इस ज्वाला पर्वत के पूर्व भाग मे **गणेश जी** (The Rock of Lord Ganesha still exist at the hill top) दक्षिण मे **धर्मराज,** पश्चिम मे **वसुकी नाग** तथा उतर मे **नरसिंह जी** द्वारों पर विराजमान है। इन की पूजा कर के तत् पश्चात 16 पटलो रुपी 16 ज्वालायें (लपटे) की पूजा करें उनके नाम

गणपति

उतरोतर दिशा मे **1) वरुणी 2) वात्यालीं 3) वाराही 4) कुलसुन्दरी 5) कुवेरी 6) कुलिका 7) कुण्थी 8) कुसिता 9) कुटिला 10) कुहू 11) कुण्ठी 12) कुम्बेश्वरी**

ज्वालाओं के मध्य शिलारुप मे ज्वाला माता

13) कुन्तकी 14) कुवेरी 15) करुघ्नी तथा 16) कृति है

इसके उपरान्त 8 योगनियाँ का निवास स्थान है जिनके नाम हे

1) माया 2) मोहनी 3) बाला 4) भगरुपिनी 5) भगवासा 6) भीस्ण्डा 7) मृडानी तथा मायान्देश्री है

इनको प्रणाम करके आगे "ज्वाला" देवी की 10 सुखदायिनी मूर्तिया है जो साधको को हर प्रकार की सुख व सम्पदा देने मे तत्पर रहती है व है **1) ब्रहमी 2) शाम्भवी 3) दुर्गा 4) वाराही 5) कुलकामनी 6) नारसिंही 7) कौमारी 8) मातंगी 9) भद्रकाली तथा उग्रतारा है यह सभी देवीयाँ "ज्वाला" देवी की 10 कलाए है।**

इसके उपरान्त उपर **त्रिपुरसुन्दरी** तथा **दक्षिणकालीका** की पूजा करे। मध्य भाग मे साध ाकों को भगवती "ज्वाला" (ज्वालामुखी) के दर्शन होंगे जिनके चारों और **ज्वालिनी, जठिनी, जटा तथा जालांधरी** देवीयाँ प्रवास करती है वही उस शिलारुपी भगवती "ज्वाला" आहवान करें तथा स्तुति करें।

साधक व यात्री जन पहले वसुकी (नेत) नामक जलकुण्ड मे स्नान करके माता का दर्शन करते है माता के गृह तक पहुँचने के लिए 365 सीडीयों पर चढ़ कर जाना पडता है मंदिर अष्टकोणीय है।

गणपति जी का ध्यान करें

ॐशुक्लाम्बर धरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नो पशान्तये।।
अभिप्रीतार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैरपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।।
गुरुः ब्रह्मा, गुरुःविष्णु, गुरुःसाक्षात् महेश्वरः।
गुरुरेव जगत्-सर्वं तस्मै श्री गुरुवे नमः।।
ॐ गुरुवे नमः, परम गुरुवे नमः,
श्री परमेष्टिने गुरवे नमः, श्री परमाचार्याय नमः, आदि-सिद्धभ्यो नमः।
ज्वालादेवी का ध्यान/ व नमस्कार करें
ज्वालामुखी महाज्वाले ज्वाला पिंगललोचने।
ज्वालातेजे महातेजे ज्वालामुखी नमोस्तुते
अनामिका (Sun Finger) में पवित्रक पहनें (या फूल हाथ में रखें)।
यदि अँगूठी (नग के बगैर) हो तो पहने
वसो पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्त्रधारंम।

अयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि, रायस्पोषेण बहुला भविन्तं।।

रत्नदीप को तिलक व पुष्प (अक्षत) चढ़ाते हुए पढ़ें

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतः तिमिरापहः
प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः।।

धूप को तिलक अर्घ पुष्प चढ़ाते हुए पढ़ें)

वनस्पति रसो दिव्यो, गन्धाढ्यो गन्धवतमः
आधारः सर्वदेवानां धूपोऽयं परिकल्पितः।

(सूर्य देवता को अर्घ चावल फूल चढ़ाते हुए पढ़ें)

नमो-नमो धर्म निधानाय, नमः स्वकृतसाक्षिणे,
नमः प्रत्यक्ष देवाय, श्री भास्कराय नमो नमः।

(निर्माल पात्र (थाली) में जल की घारा डालते हुए पढ़ें।) :-

यत्रास्ति माता, न पिता न बन्धुः भ्रातापि नो यत्र सुहृत्जनशच,
न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिः तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये।

आत्मने नारायणाय आधार शक्त्यै श्री ज्वाला देवी पूजन निमिते। दीप-धूप संकल्पात् **सिद्धिर-अस्तु दीपो नमः धूपोनमः।**

(बायां जनेऊ रखकर पितरों को जल देते हुए पढ़ें)

नमः पितृभ्यः प्रेते भ्यो नमो धर्माय विष्णवे। नमो यमाय रुद्राय कान्तारपतये नमः।।
ॐ तत्-सत-ब्रह्म अध तावत् आषाढ शुक्ल पक्ष चर्तुदशी (सोमवार) श्री ज्वाला देव्यै **दीपः स्वधा धूपः स्वधा।**

पुनः दाये तरफ जनेऊ रखें-

यदि आप ज्वाला पीठ पर बैठे हो तो आप माता "ज्वाला देवी" पर जल चढ़ावें।

अथवा- अपने-अपने घरों मे थोड़ा सा जल हाथों में धारण करके माता के चित्र (Photo) पर जल की बूदों से **पाध्य दे**
पानी पाध्य (Offer water at feet) के लिए पढ़ेः-

श्री ज्वाला देव्यै पाध्यं नमः।
पाध्य का बचा हुआ पानी छोड़कर नया पानी लेवे और अर्ध्य देवे।
श्री ज्वाला देव्यै अर्ध्य नमः।

तिलक लगाते हुए पढ़े।

श्री ज्वाला देव्यै गन्धों नमः।

अपने आप को मध्यमा अँगुली (Middle Finger) से तिलक, अर्ध-फूल चढ़ावें

परमात्मने पुरुषोत्तमाये, पंचभूतात्मकाय, विश्वात्मने मंत्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधार शक्तयै समालभनं गन्धो (तिलक) नमः अर्घोनमः पुष्पं नमः।

फूल चढ़ाते हुए पढ़े

ऊँ ह्रीं **ज्वालामुख्यै** नमः, **शुभायै** नमः, **दुःखहारिण्य** नमः, **बलिप्रयायै** नमः, **नागकन्यायै** नमः, **मार्तण्डरुपाय** नमः, **मूलाधारायै** नमः, **दुर्भाग्यहरायै** नमः, **षट्चक्रस्थायै** नमः, **सुभद्रायै** नमः, **वितस्तायै** नमः, **ताप्यै** नमः, **शिवसड़गायै** नमः, **मलिम्लुच्यैः** नमः **सन्ध्यायै** नमः,

अग्निवाहनयै नमः, **अग्नीश्वयै** नमः **बलाकायै** नमः, **स्कन्दमात्र** नमः, **गुप्तायै** नमः,**प्रकटाय** नमः, **मनोरमायै** नमः, **वरदायै** नमः, **प्रेतस्थायै** नमः, **वहिनलोचनायै** नमः, **अग्निमुख्यै** नमः, **महादीप्तयै** नमः, **सेद्रायै** नमः, **वसुंधरायै** नमः, **सप्तस्वरायै** नमः, **कालरात्र्यै** नमः, **महारात्र्यै** नमः, **महाविद्यायै** नमः, **ज्वालामुखीश्वरी** देव्यै नमः ऊँ **महात्रिपुरसुन्दर्यै** नमः

ॐ ह्रीं श्रीं ज्वालामुखि मम सर्वशत्रून् भक्षय भक्षय ह्रीं फट् स्वाहा।

श्री ज्वाला भगवतयै अर्घों नमः पुष्पं नमः।।

दीप/धूप चढाते हुए पढें..... व (चामर) करें

श्री ज्वाला भगवतयै दीपं,धूपं/कर्पूर परिकल्पयामि नमः।

(फुल हाथों में लेकर)..... व (चामर) करें।

लीलारब्ध स्थापित लुप्ताखिल लोकां,
लोकातीतै र्योगिभिरन्तर्हृदि मृग्याम्।
बालादित्य श्रेणिसमान धुतिपुञ्जां,

गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडे।।

आशापाश क्लेशविनाशं विदधानां
पादाम्भोज ध्यानपराणां पुरुषाणाम्
ईशीमीशाङ्गार्धङ्ग हरां तां तनुमध्यां।

गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडे।।

प्रत्याहार ध्यानम समाधि स्थितिभाजां,
नित्यं चिते निर्वृति काष्टां कलयन्तीम्।
सत्य ज्ञानां आनन्दमयीं तां तडिदाभां।गौ०।

गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडे।।

चन्द्रापीड़ा नन्दितमन्द स्मितवक्त्रां,
चन्द्रापीड़ा लङ्कत लोला लकभाराम्।
इन्द्रोपेन्द्रा द्यर्चित पादाम्बुज युग्मां।

गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडे।।

नानाकारैः शक्तिकदम्बै भुवनानि,
व्याप्य स्वैरं क्रीडति यासौ स्वयमेका,
कल्याणीं तां कल्पलतामानतिभाजां।
गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडे।।

मूलाधारादुत्थितवन्तीं विधिरन्ध्रं,
सौरं चान्द्रं धाम विहाय ज्वलिताङ्गीम्।
स्थूलां सूक्ष्मां सूक्ष्मतरां तामअभिवन्धां।

गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडे।।

आदि क्षान्ताम अक्षरमूर्त्या विलसन्ती,
भूते भूते भूत कदम्ब प्रसवित्रीम्
शब्द ब्रह्मानन्दमयीं तामभिरामां।

गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडे।।

यस्याः कुक्षौ लीनमखण्डं जगदण्डं,
भूयो भूया प्रादुरभूदक्षतमेव।
भर्त्रा सार्धं तां स्फटिकाद्रौ विहरन्तीं।

गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडे।।

यस्यामेतत्प्रोतमशेषं मणिमाला
सूत्रे यद्धत्क्वापि चरं चाप्यचरं च
तामध्यात्म ज्ञानपदव्यां गमनीयां।
गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडे।।

नित्यः सत्यो निष्कल एको जगदीश;
साक्षी यस्याः सर्गविधौ संहरणे च
विश्वत्राण क्रीडनशीलां शिवपत्नी।गौ०।

गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडे।।

पूजा काले भावविशुद्धिं विदधानो
भक्तया नित्यं जलपति गौरीदशकं यः
वाचां सिद्धिं सम्पतिमुचैः शिवभक्तिं,
तस्यात् वश्यं पर्वत पुत्री विदधात्रि।गौ०।
गौरीम् अम्बाम् अम्बु रुहा क्षीम् अहम् ईडे।।

माता पर फूलों का छत्र चढ़ावे।

श्री ज्वाला भगवतयै छत्रं परिकल्पयामि नमः।

माता को आईना (Mirror) **दिखाते हुए पढ़े।**

श्री ज्वाला भगवतयै आदर्श परिकल्पयामि नमः।

थोड़ा पानी किसी (निर्माल्य पात्र में छोड़ते हुए पढ़े।

श्री ज्वाला भगवतयै पूजन निमते धूप दीपात् सड़क्लपात् सिद्धिरस्तु धूपं नमः दीपो नमः

साफ पानी निर्माल्य पात्र में छोड़ते हुए पढ़े

श्री ज्वाला भगवतयै वासो नमः।

भगवती को मन से आधा प्रक्रम करें तथा माफी माँगे।

अन्नं नमः अन्नं नमः आज्यम आज्यम अन्नम अद्य दिने अद्य यथा स सड़कल्पात सिद्धिर अस्तु अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं द्रव्यहीनं मन्त्रहीन च यद्गतं तत् सर्वम अछिद्रं सम्पूर्णम् अस्तु।

हथेली में पानी रख कर पढ़े व चढावे।

श्री ज्वाला भगवतयै आचमनीयं नमः

माता के सामने दक्षिणा रखें व पढ़े।

एता भगवतयै सदक्षिणा अनेन प्रीयन्तांः प्रीताः सन्तुः।

(तत नैवेध्य) अब नैवेध्य लाये।

नैवेद्य की थाली को छूकर मन्त्र पढ़ें

(अमृतेष्मुद्रया अमृतीकृत्य)। अमृतम्अस्तु अमृतायतां नैवेद्यम्, सावित्राणि, सावित्रस्य, देवस्य त्वासवितुः हस्ताभ्याम्ादधे। श्री महागणपत्यादि कलश मण्डल देवताभ्यः, वासुदेवादिभ्यः, विष्णु पंचायतन देवताभ्यां। अभ्यङ्करी देव्यै क्षेमङ्करी भवान्यै, सर्वशत्रु घातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये स्थानीय भैरवाय पञ्च चत्वारिंश्द् वास्तोष्पति याग देवताभ्यः इंद्रयादिभ्याः दशलोकपालेभ्यः

आदित्यादिभ्यो, एकादश ग्रहस्याः, महागायत्र्ये,सावित्र्ये, सरस्वत्यै, हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्यः।

ॐ तत्सद ब्रह्मा अधतावत् तिथो अषाढ़ शुक्ल पक्षस्य सोम वासरायां श्री ज्वाला भगवतयै (ईष्टदेवि) संताषणार्थ श्री ज्वाला पूजन निमिते उों नमो नेवेधं नेवेदयामि।

चटू को (जो हम छत पर मातृकाओं के लिए बाहर रखते है) छूते हुए पढ़े।

या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा आकाशं मातृभ्य अन्नं नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः (चटू को तिलक व अर्घ-फुल लगायें) इसमे परम्परा व कुल रीति के अनुसार ही भोग लगायें।

भगवती के लिए एक छोटी थाली में नैवेध रखें।

श्री ज्वाला भगवतयै नैवेद्यं नेवेदयामि नमः।

थोड़ा भोग अलग से क्षंत्रपालों के हेतु रखे व पढ़ें।

यो यस्मिन निवासति क्षेत्रपालः संकिकरः तस्मै निवेदयाम्यद्य बलिं पानीय संययुत्तम्।।

क्षां क्षेत्रसधि पतये अन्नं नमः।

रां राष्ट्राधि पतये नमः।

सर्वाभयं वरप्रद मयिपुष्ठि पुष्टपति दधातु।

माता के विग्रह (फोटो) पर ज्ञमा पुष्प अर्पण करते हुए पढ़ें।

ज्वालापर्वत संस्थितां त्रिनयनां पीठ त्रया अधिष्ठिता ज्वालाम्बर।

भूषितां सुवदनां नित्यामद्धश्यांः जनेषट् चक्राम्बुजमध्यगां वर गदाभ्भोजाभ्यान्बिभ्रतीं चिद्रूपां सकलार्थ दीपनकरी ज्वालामुखी नौम्यहम्।

आपन्नोस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा भगवती त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतम्।।

उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा उरसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।।

कृपया ध्यान दे

इस समय कशमीरी पंडित भारत की मूल सभ्यता को बचाने का अन्तिम प्रयास कर रहें हे यह तभी सम्भव होगा जब सामाजिक स्तर पर हम एक रहेंगे व अपनी सेस्कृति का प्रचार व प्रसार करेंगे।

यः पठेत् पाठयेत् वापि श्रृणोति श्रावयेदपि।
भक्तया भक्तो महादेवी स भवेद् भौवोपमः
शिवरात्रयां च सड्क्रान्तौ, ग्रहणे, जन्मवासरे
भैरवस्य बलिं दत्वा मूलमन्त्रेण मान्त्रिकः

भैरव स्थान

अपनी कुलरीति के अनुसार ज्वाला माता व् उसके भैरव को भोग चढ़ावें

Samuhik Recitation of "Seed Mantra" of Mata Jawala Ji

जिस प्रकार पृथ्वी के गर्भ से ज्वाला सभी पदार्थों को ज्वाला रुप मे परिणित करके ऊपर की और पूरे वेग के साथ ज्वालामुखि के प्रचण्ड रुप मे प्रकट होती है। उसी प्रकार हमारे शरीर मे मूलाधार चक्र से पूरे वेग के साथ ऊपर की और उठकर सहस्राक्ष चक्र मे पूर्ण रुप से प्रकट होता है वही परम शक्ति शलिनी ब्रह्माण्ड को धारण किये हुए है जिसको हम माता **ज्वालामुखि कहते है।**

SATISAR FOUNDATION has evolved a programme of a collective recitation of Seed Mantra at a single point of time worldwide so that blessings of Devi is invoked in a collective form and lead us to light from prevalent darkness and this community survives this onslaught.

The Foundation requests every Kashmiri Pandit to spare some time on 2nd July at 7.30 P.M. Sharp and should start reciting Seed Mantra (108 times) whereever he/she may be. Also we would like to impress upon our community brothers the essence of time fixed is very essential to make the miracle happen successfully. We are indeed indebted to **Sh. M.K. Raina & his son Sh. Bhan Ji** for providing the vital data. May Goddess bless them ll along with nears and dears.

Vidwat Mandal, 9419192733

LET US FOLLOW THIS SOCIAL CODE

1. Preserve and Promote our Language;

- By conversing in Kashmiri with our children and encouraging them to learn, speak and interact in Kashmiri with our fellow community brethren.

2. Protect our Identity;

- By imbibing a sense of pride in our unique social, cultural and spiritual traditions & treating every Kashmiri Pandit equal while maintaining/following our age-old social marital order.

3. Uphold our traditions;

- By following the indigenous scientific Lunar calender in observing special occasions etc.

4. Strengthen our Brotherhood;

- By expanding our social circle.
- By caring for each other, as mutual care is the only ray of hope for our Survival in Exile.

5. Strengthen Socio-Cultural Institutions;

- Physically, intellectually and financially, as these are the pillars of our identity.

SATISAR FOUNDATION

C/o Sri Sri Jagatamba Sharika, Hari Parbat, Devi Angan,
Paloura Buta Nagar-Jammu
Post Box No. 118, Head Office Rani Talab, Jammu, J&K-India
Correspondence:- C/o 181-A Sector-2, Pamposh Colony,
Janipur-Jammu-190007 (J&K)
E-mail:- satisar2000@yahoo.com, Visit us at : www.satisar.org
Tel:9419117251,9796457461 (off), 9419134180,
09810137771 (Delhi), 09845907365 (Banglore)

RCC: 9622118949

Price: Promotion and propagation of Kashmiri Pandit Culture